Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian

संपादक : शेख़ मुजाहिद अहमद

www.akhbarbadrqadian.in **E-Mail** : badarqadian@gmail.com

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपनी फ़जल नाज़िल करे। आमीन

PUNHIND 01885 अंक - 2, वर्ष - 1, जुम्मेरात, 17 मार्च 2016, मूल्य - 300 रुपए वार्षिक, पृष्ठ संख्या - 8

अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात के साथ जोड़ा है कि ऐसा व्यक्ति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी (पालन) करे।

मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पालन करना और आप से मुहब्बत रखना अंततः मनुष्य को ख़ुदा का प्यारा बना देता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मैं इस जगह यह भी बतलाता हूँ कि वह क्या चीज़ है कि सच्ची और सही अनुकरण आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सब बातों से पहले दिल में पैदा होता है। अत: याद रहे कि वह सलीम दिल है यानी दिल से दुनिया की मुहब्बत निकल जाती है और दिल एक अनन्त और हमेशा के आन्नद का इच्छुक हो जाता है। फिर इस के बाद एक साफ और पूर्ण मुहब्बत इस सलीम दिल के कारण प्राप्त होती है और यह सब नेअमतें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से बतौर विरासत मिलती हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ख़ुद फरमाता है قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ उन्हें कह दे कि तुम ख़ुदा से मुहब्बत करते हो तो आओ मेरा अनुकरण करो तो ख़ुदा भी तुम से मुहब्बत करे बल्कि एक तरफा मुहब्बत का दावा बिल्कुल एक झूठ और निरी बातें हैं। जब इंसान सच्चे तौर से ख़ुदा तआला से मुहब्बत करता है तो ख़ुदा भी उस से मुहब्बत करता है। तब ज़मीन पर इसके लिए एक स्वीकृति फैलाई जाती है और हज़ारों इंसानों के दिलों में एक सच्ची मुहब्बत उसकी डाल दी जाती है और एक जज़ब करने की शक्ति उसे दी जाती है और एक नूर उस को दिया जाता है जो हमेशा उसके साथ होता है। जब एक इंसान सच्चे दिल से ख़ुदा से मुहब्बत करता है और सारी दुनिया पर उसे धारण कर लेता है और अल्लाह के अतिरिक्त किसी की महानता और सम्मान उसके दिल में बाकी नहीं रहता बल्कि सबको एक मरे हुए कीड़े से भी बदतर समझता है। तब ख़ुदा उसके दिल को देखता है एक भारी तजल्ली के साथ उस पर नाज़िल होता है और जिस तरह एक साफ आइना में जो सूर्य के सामने रखा गया है सूर्य का प्रतिबिम्ब ऐसे पूरे तौर पर पड़ता है कि रूपक के रूप में कह सकते हैं कि वह वही सूर्य जो आसमान पर है इस आईने में भी मौजूद है। ऐसा ही ख़ुदा ऐसे दिल में उतरता है और उसके दिल को अपना अर्श बना लेता है। यही वह काम है जिसके लिए इंसान बनाया गया है। पहली किताबों में जो पूर्ण सच्चों को ख़ुदा के बेटे करके कहा गया है उसके भी यह अर्थ नहीं हैं कि वे वास्तव में ख़ुदा के बेटे हैं क्योंकि यह तो कुफ्र है और ख़ुदा बेटों और बेटियों से आज़ाद है बल्कि यह अर्थ है कि उन पूर्ण सच्चों के साफ दिल में प्रतिबिम्ब के रूप में ख़ुदा उतरा था और एक व्यक्ति का प्रतिबिम्ब जो आइना में दिखाई देता है रूपक के रूप में मानो वह उसका बेटा है क्योंकि जैसा कि बेटा बाप से पैदा होता है ऐसा ही प्रतिबिम्ब अपने मूल से पैदा होता है। अत: जब ऐसे दिल में जो निहायत साफ है और कोई गंदगी उसमें बाक़ी नहीं रही अल्लाह तआला की तजल्लियात का अवतरण होता है तो वह प्रतिबिम्ब वाली तस्वीर रूपक के रंग में मूल के लिए बेटे के रूप में हो जाती है। इसी आधार पर तौरात में कहा गया है कि याकूब मेरा बेटा बल्कि मेरा पलोठा बेटा और ईसा इब्ने मरियम को जो इंजीलों में पुत्र कहा गया, अगर ईसाई लोग उसी हद तक खड़े रहते कि जैसे इब्राहीम और इसहाक और इसमाईल और याकूब और यूसुफ और मूसा और दाऊद और सुलेमान आदि ख़ुदा की पुस्तकों में रूपक के रूप में ख़ुदा के बेटे कहलाए हैं, ऐसा ही ईसा भी है तो उन पर कोई आपत्ति नहीं होती। क्योंकि जैसा कि रूपक के रंग में उन नबियों को पहले नबियों की किताबों में बेटा कर के पुकारा गया है, हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुछ पेशगोइयों में ख़ुदा करके पुकारा गया है और वास्तविक बात यह है कि न वे सभी नबी ख़ुदा तआला के पुत्र हैं और न आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा हैं बल्कि यह सभी रूपक हैं। मुहब्बत के ढंग में। ऐसे शब्द ख़ुदा तआला के कलाम में बहुत हैं। जब इंसान ख़ुदा तआला की मुहब्बत में ऐसा खो जाता है जो कुछ भी नहीं रहता तब उसी फना की हालत में ऐसे शब्द बोले जाते हैं। क्योंकि इस स्थिति में उनका अस्तित्व बीच में नहीं होता जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है।

قُلۡ یٰعِبَادِیَ الَّذِیۡنَ اَسۡرَفُوۡا عَلٰۤی اَنۡفُسِہِمۡ لَا تَقۡنَطُوۡا مِنۡ رَّحۡمَۃِ اللّٰہِ اِنَّ اللّٰہَ یَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ جَمِیۡعًا

अर्थात उन से कह कि हे मेरे बन्दो ख़ुदा की रहमत से निराश मत हो ख़ुदा सब गुनाह माफ कर देगा। अब देखो इस जगह या "इबादल्लाह" की जगह "या इबादी" कह दिया गया हालांकि लोग ख़ुदा के बन्दे हैं न आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बन्दे। मगर यह रूपक के रंग में बोला गया।

ऐसा ही फरमाया " इन्नल्लज़ीना युबायेऊनक इन्नम युबायेऊनल्लाह यदुल्लाहे फौक अयदीहिम" अर्थात जो लोग तेरी बैअत करते हैं वे वास्तव में ख़ुदा की बैअत करते हैं। यह ख़ुदा का हाथ है जो उन के हाथों पर है। अब इन सारी आयतों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ ख़ुदा का हाथ ठहराया गया मगर ज़ाहिर है कि वह ख़ुदा का हाथ नहीं है।

ऐसा ही एक जगह फरमाया

فَاذۡکُرُوا اللّٰہَ کَذِکۡرِکُمۡ اٰبَآءَکُمۡ اَوۡ اَشَدَّ ذِکۡرًا

तुम ख़ुदा को याद करो जैसे तुम अपने बापों को याद करते हो। इसलिए इस जगह ख़ुदा तआला को पिता के साथ उपमा दी और रूपक भी केवल उपमा की हद तक है।

ऐसा ही ख़ुदा तआला ने यहूदियों का एक कथन मिथक के रूप "अनिल यहूद" कुरआन शरीफ में उल्लेख किया है और वे देखने यह है कि نَحۡنُ اَبۡنٰٓؤُا اللّٰہِ وَاَحِبَّآؤُہٗ यानी हम ख़ुदा के बेटे और उसके प्यारे हैं। इस जगह "अबना" के शब्द का ख़ुदा तआला ने कुछ रद्द नहीं किया कि तुम कुफ्र बकते हो बल्कि यह कहा कि तुम ख़ुदा के प्यारे हो तो वह तुम्हें क्यों अज़ाब देता है और "अबना" दोबारा ज़िक्र नहीं किया। इससे मालूम हुआ कि यहूदियों की किताबों में ख़ुदा के प्यारों को बेटा करके भी पुकारते थे।

अब इस सारे बयान से हमारा उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात से संबन्धित है कि ऐसा आदमी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करे। अत: मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पालन करना और आप से मुहब्बत रखना अंततः मनुष्य को ख़ुदा का प्यारा बना देता है। इस तरह से है कि ख़ुद उसके दिल में मुहब्बते इलाही की एक आग पैदा कर देता है। तब ऐसा आदमी हर एक बात दिल हटा कर ख़ुदा की तरफ झुक जाता है और इसकी मुहब्बत और शौक केवल सिर्फ ख़ुदा तआला से रह जाता है तब अल्लाह तआला की मुहब्बत की एक विशेष तजल्ली उस पर पड़ती है और उस को एक पूर्ण रंग प्रेम और मुहब्बत का देकर शक्तिशाली जज़बा के साथ अपनी तरफ ख़ीच लेती है। तब नफसानी जज़बों पर वे हावी आ जाता है और उसके समर्थन और सहायता में हर एक पहलू से ख़ुदा तआला के आदत से हट कर काम निशानों के रंग में प्रकट होते हैं।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन, भाग 22, पेज 65-67)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अनमोल वचन

जो लोग क़ुर्आन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएंगे।

सम्पादकीय

इस्लाम में सफाई का महत्त्व(भाग-1)

धार्मिक शिक्षा में सफाई को जो महत्त्व प्राप्त है उसका अनुमान आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस उपदेश से अच्छी तरह लगाया जा सकता है आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फर्माया कि:-

सफाई ईमान का आधा भाग है। यह बात याद रखनी चाहिए कि मोमिन का शरीर और अंतर आत्मा दोनों साफ एवं पवित्र होने चाहिए। अगर मनुष्य का शरीर साफ न हो तो,दिल के इरादे,नीय्यत और विचार साफ न हो केवल बाहरी सफाई हमारे खुदा को पसंद नहीं। आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फर्माया कि:-

निस्संदेह अल्लाह तआला शरीर को नहीं देखता और न ही तुम्हारी शक्ल को देखता है। बल्कि उसकी दृष्टि तुम्हारे दिलों पर होती है। आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस उपदेश के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेअर में फर्माते हैं कि:-

"जिस्म को मल मल के धोना यह तो कुछ मुश्किल नहीं
दिल को जो धोए वही है पाक नज़दे किरदिगीर"

अर्थात अपने शरीर को रगड़ रगड़ कर साफ करना कोई मुश्किल कार्य नहीं है लेकिन जो अपने दिल को धोए अल्लाह तआला के निकट वही पवित्र और साफ है। वास्तविकता यह है कि शरीर एवं दिल की सफाई का चोली दामन का साथ है अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में फर्माता है कि अल्लाह अधिकता से तौबा करने वालों से प्रेम करता है और पवित्र रहने वालों से भी प्रेम करता है।

(सूर: अल बकर: 223)

इस आयत में भी शरीर एवं दिल दोनों का सफाई का वर्णन किया गया है। इसी तरह अल्लाह तआला फर्माता है कि "हम ने इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया था कि मेरे घर की परिक्रमा करने वालों और एअतकाफ करने वालों और रुकू और सज्दा करने वालों के लिए पबित्र और साफ रखो" (सूर: बकर: 126) इस आयत में अल्लाह तआला के घर को साफ सुथरा रखने की हिदायत फर्माई गई है। इसी तरह अल्लाह तआला हज्ज के वर्णन में फर्माता है कि अर्थात अपनी मैल कुचैल दूर करो। (सूर: अल हज्ज-30) इसमें भीतरी सफाई और दिल की सफाई के अतिरिक्त शारीरिक सफाई का भी आदेश है। इसी तरह अल्लाह तआला रसूल करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लमको सम्बोधित करके फर्माता है कि:- और अपने वस्त्रों को बहुत साफ रख। (सूर:अल मुद्दस्सिर-5) आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लमने फर्माया है कि अल्लाह तआला सुन्दर है और सुन्दरता को पसंद करता है। इसी हदीस के अनुसार हर एक के लिए आवश्यक है कि वह अपने परिवेश के अनुसार साफ सुथरे और अनुकूल वस्त्र पहने और अपने शरीर की सफाई का ध्यान रखे। नबी करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम फर्माते हैं कि:- धुले हुए वस्त्र पहनो और बालों को साफ सुथरा और कंघी करके रखो और दातुन आदी से अपने दांत व मुंह साफ रखो और सुन्दरता अपनाओ और साफ सुथरे रहा करो।

हज़रत अबु हुरैरा से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद स.अ.व ने फर्माया कि पांच चीज़ें प्रकृति में रखी गई हैं। मूछें तराछना, काख के बाल काटना,नाखुन काटना,खत्ना करना और ज़ेरे नाफ (नाभी के नीचे के) बाल काटना। (सुनन निसाई किताबु ज़ैनब)

हज़रत आयशा से रिवायत है कि आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फर्माया कि:- दातुन मुंह को साफ करने और अपने ख़ुदा को खुश करने का साधन है। हज़रत हुज़ैफा रज़ि. से वर्णन है कि हज़ूर स.अ.व जब रात को उठते तो अपना मुंह दातुन से साफ करते (सुनन निसाई किताबु तहारत) इसी हज़रत अबु हुरैरा से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फर्माया कि अगर मैं अपनी उम्मत पर बोझ न समझता तो मैं उनको प्रत्येक नमाज़ और वुज़ू से पहले दातुन करने का आदेश देता। (सही बुखारी)

इसी तरह आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम शौच आदि जाने के बाद सफाई करते और हाथों को अच्छी तरह धोते। आप ने लीद,गोबर या हड्डी आदी से सफाई करने से मना फर्माया।

इसी तरह पुरुष एवं स्त्री के विशेष सबंधों के पश्चात नहाने और सफाई करने के बारे में जिस विस्तार के साथ इस्लाम ने शिक्षा दी है किसी और धर्म ने नहीं दी। इसी तरह जुमअ: में नहाने ओर साफ वस्त्र पहनने और सुगन्ध लगा कर नमाज़ में जाने का आदेश है। लेकिन औरत के लिए मना है कि अत्यधिक सुगन्ध या श्रृंगार करके बाज़ार में जाए। आंहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बात को पसंद न करते थे कि कोई अपने बालों को गंदा और बिखरा हुआ रखे। आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को फटे हुए कपड़े पहने हुए देखा तो फर्माया कि जब अल्लाह तआला तुझे धन दौलत दे दे तो वह उसके प्रभाव भी तुझ पर देखना चाहता है। (सुनन निसाई किताबु ज़ीनत)

अंत में हज़रत डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब की किताब कर न कर में से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का वर्णन किया जाता है आप फर्माते हैं कि:-

* तू अपने शरीर को सदैव पवित्र और स्वच्छ रख।
* तू मल-मूत्र के पश्चात् हमेशा अंगों को साफ किया कर।
* तू अपने दाँतों को दातून या मंजन से प्रतिदिन साफ किया कर।
* तू अपने सिर के बालों को नियमित रूप से कटवाया कर।
* तू अपनी मूछें कतरवा कर छोटी रखा कर ताकि वह पीने कि वस्तुओं में न पड़ें।
* तू कोई अनुचित कार्य अपने अंगों मे न किया कर।
* तू कम से कम जुमा (शुक्रवार) के दिन अवश्य स्नान किया कर और संभव हो तो प्रतिदिन स्नान कर।
* तू अपने लड़के का ख़तना करा।
* तू नियमित रूप से शारीरिक व्ययाम की आदत डाल।
* तू अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख कि ईमान के पश्चात् स्वास्थ्य बड़ी ने'मत है।
* तू अपने बालों को कंघी से ठीक रखा कर।
* तू जब रेलवे लाइन को पार करने लगे तो पहले सावधानी पूर्वक दोनों ओर देख ले कि कोई गाड़ी इत्यादि तो नहीं आ रही।
* तू किसी को दण्ड देते समय उस के मुह पर न मार।
* तू दुर्गन्ध से बच क्योंकि वह शरीर और आत्मा दोनों के लिए हानिकारक है।
* तू पढ़ते समय अपनी किताब को एक फुट से अधिक आखों के निकट न ला।
* तू बाज़ार में अपनी छड़ी घुमाता हुआ न चल, ऐसा न हो कि किसी को चोट लग जाए।
* तू मार्ग में फलों के छिलके इत्यादि न डाल ऐसा न हो कि लोग उन पर से फिसलें।
* तू बहुत तीव्र प्रकाश की ओर न देख।
* तू प्रात:काल की नियमित सैर से अपने स्वास्थ्य को बढ़ा।
* तू मल-मूत्र को बहुत विवशता के अतिरिक्त न रोक।
* यदि तुझे तैरना नहीं आता तो कभी गहरे पानी में न घुस।
* तू आग और आतिश-बाज़ी से न खेल।
* तू रेल की खिड़की में से गर्दन और धड़ निकाल कर न बैठ।
* तू झुक कर बैठने की आदत से बच। न झुक कर लिख – पढ़।
* तू बाज़र मे आगे देख कर चल।
* तू कुर्सी या बेंच पर बैठकर आदत के तौर पर पैर न हिला।
* तू ध्यान रख के तेरी सांस से दुर्गन्ध तो नहीं आती।
* तू ऐसे स्थान पर वुज़ू न कर जहां लोग पेशाब करते हों।
* तू अपनी दाढ़ी-मूछों को साफ रख और उनको बिसांध (मलिन) न होने दे।
* तू यथासंभव चलती रेल में इंजन की ओर मुंह खिड़की से बाहर निकाल कर न देख ऐसा न हो कि इंजन का कोयला आंख में पड़ जाए।
* तू बीमारी में अपना उपचार कर तथा स्वस्थ होने तक बार-बार करता रह।
* तू स्लेट की पेन्सिल, गोली, पैसे और कौड़ी इत्यादि को मुख में रखने की आदत न डाल।
* हे लड़की ! तू अपनी सुई को जगह-जगह न टाँक दिया कर।
* तू किसी की जूँठी सलाई अपनी आंख में न लगा।
* तू किसी की जूँठी मिस्वाक (दातुन) प्रयोग में न ला।
* तू जिस प्रकार अपने चेहरे को स्वच्छ रखता है उसी प्रकार अपनी गर्दन और पैरों को भी स्वच्छ रख।
* तू मुँह से सांस लेने की आदत छोड़ दे और नाक से सांस लिया कर।

शेष.....
(कर न कर पृष्ठ 1-18)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला जब किसी को अपनी तरफ से खड़ा करता है या नबियों को भेजता है तो उनका समर्थन और नुसरत (सहायता) भी करता है और यदि सच्चाई दिखाने के लिए दुनिया की बड़ी आबादी को उन के ग़लत कामों की वजह से सज़ा देना चाहे तो परवाह नहीं करता ।

इस्लाम का हुक्म यही है कि हर आदमी बजाय अपना हक लेने और उस पर ज़ोर के दूसरे पक्ष को देने और इसे स्थापित करने की कोशिश करें।

यह ग़ैर इस्लामी रूह है कि चूंकि दूसरे के हक पर हम एक लंबे समय से स्थापित हैं इससे लाभ उठा रहे हैं और उस हक को अपना हक समझने की हमें आदत हो गई है इसलिए हम दूसरे को वह हक नहीं दे सकते। यह बहुत ग़लत बात है जो इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ है। अफसोस है कि कई बार कज़ा में ऐसे मामले आते हैं कि हमारी जमाअत में भी भाई-भाई का अधिकार दबा रहा होता है या अन्य रिश्तेदारों के हक दबा रहे हैं। अगर हम यह इस तरफ ध्यान दें तो हमारे कज़ा के मस्ले भी कई हल हो सकते है।

दुनिया के झगड़े बेहूदा होते हैं। मेरा और तेरा क्या ग़ुलाम का तो कुछ भी नहीं होता। वह तो जब अपने आप को कहता है कि अब्दुल्ला हूँ तो इसका मतलब यह होता है कि अब उसका कुछ नहीं। हमें पहले से अधिक इस बात को समझने की जरूरत है कि हम किस तरह अब्दुल्ला बनने का हक देना है और अपनी ज़िद और अनानियत को छोड़ना है और अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने की कोशिश करनी है।

जमाअत के लिहाज़ से भी इस साल चुनाव होने हैं इस अनुसार भी अपने विचार प्रत्येक को ठीक करने की ज़रूरत है कि दुआ के बाद हर रिश्ते को और हर रिश्ते को छोड़ कर अपना हक जो है वह सही उपयोग करें अपनी राय दें और फिर जो फैसला हो उसे कुबूल कर लें। प्रत्येक पूरी तरह से अपनी ज़ातीयता से ऊपर होकर अपने फैसले करें।

अफसर हों या ओहदेदार हों वह सिर्फ अपने अधीनस्थों पर निर्भर न करें बल्कि ख़ुद भी सीधे हर काम पर निगरानी रखें और involve होने की कोशिश। तभी काम सही रंग में अंजाम तक पहुंच सकता है।

कई बार चाहने के बावजूद कुछ काम नहीं होते। इसलिए वे चाहना जो है वह बेदिली से होता है उस के साथ वह सब सामान जो बयान किए गए हैं वे नहीं होते अज़्म नहीं होता हौसला नहीं होता मेहनत नहीं की जाती। केवल मन में सोचा जाता है कि हम चाहते हैं। विशेष रूप से इस बात को मैं देखता हूँ जब दुआ का सवाल आता है कई लोग मेरे पास आते हैं कि हमारे लिए दुआ करें हम चाहते हैं कि दुआ में नियमित हो जाएं लेकिन नियमित नहीं। बाकी कामों का जब चाहते हैं वह कर लेते हैं लेकिन दुआ क्योंकि बेदिली से चाहते हैं सारी अपनी क्षमताएं इसे इस्तेमाल नहीं करते अल्लाह तआला से मदद नहीं मांगते इसलिए दुआ की आदत भी नहीं पड़ती। ऐसे लोगों का चाहना जो है वह वास्तव में न चाहना होता है। यह अपनी सुस्तियाँ होती हैं और बे रग़बती होती है जिस को बिना वजह के चाहने का नाम दे दिया जाता है।

यह भी एक हंसी ही है कि एक समय नमाज़ पढ़ ली जाए और समझ लिया जाए कि कर्तव्यों भुगतान किया गया है या उन लोगों के लिए भी जो यह समझते हैं कि मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ ली आकर और फर्ज़ हो गया बस काफी है। इसलिए जो लोग नमाज़ की ओर नियमित ध्यान नहीं देते वे इसी श्रेणी में आते हैं। पांच नमाज़ें हर वयस्क अक्ल वाले मुसलमान पर फर्ज़ हैं और पुरुषों पर मस्जिदों में इस नमाज़ जमाअत के साथ फर्ज़ है और इसके लिए इन्तज़ाम होनी चाहिए। या तो यह कह दें हम बालिग़ नहीं या यह कह दें बे अक्ल हैं ठीक है और जब ये दोनों चाज़ें नहीं तो नमाज़ जमाअत के साथ हर जगह कोशिश होनी चाहिए।

अहमदियत ने तो विजय होना है। चाहे हमारे जीवन में आए या बाद में आए लेकिन हमें इस विजय हिस्सा बनने के लिए तक्वा पर कायम रहने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है ताकि नस्ल बाद नस्ल यह चीज़ कायम रहे बनी रहे और हमारी नस्लें अगर हमारे ज़माने में नहीं तो हमारी नस्लें इसे देखने वाली हूँ।

कुछ साल हुए मैंने कहा था कि जमाअत को रोज़े रखने चाहिए और जमाअत में अब तक कुछ ऐसे हैं जो उस पर कायम हैं रखते हैं। कम से कम अब हमें चालीस रोज़ें साप्ताहिक ही रखें यानी चालीस सप्ताह तक रोज़े रखें खासकर दुआएं करें और नफिल अदा करें सदके दें क्योंकि जो हालात हैं जमाअत के वह कई जगह बहुत अधिक कठोरता और तीव्रता आती जा रही है। जब हम अल्लाह तआला के हुज़ूर चिल्लाएंगे तो जिस तरह बच्चे के रोने से माँ की छातियों में दूध उतर आता है आसमान से हमारे रब्ब की सहायता इंशा अल्लाह तआला नाज़िल होगी और वे रोकें और मुश्किलें जो हमारे रास्ते में हैं वे दूर हो जाएंगी। पहले भी दूर होती रहीं और अब भी इंशा अल्लाह तआला दूर होंगी।

विशेष रूप से पाकिस्तान के अहमदियों को इस ओर पहले से अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। शुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकें। नवाफिल अदा करें। सदके दें। रोज़ें रखें। दुआ के बिना और अल्लाह तआला की रहमत को जोश में लाए बिना हमारे लिए और कोई रास्ता नहीं है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 12 फरवरी 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो अपने विभिन्न ख़ुत्बों और ख़िताबों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की गई कुछ शिक्षाप्रद बातें और कहानियां बयान फरमाते हैं। मैं अलग अलग समय में यह बयान करता रहा हूँ। आज भी यही बयान करूंगा।

एक ख़ुत्बा में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह विषय वर्णन किया कि अल्लाह तआला जब किसी को अपनी तरफ से खड़ा करता है या नबियों को भेजता है तो उनका समर्थन और नुसरत (सहायता) भी करता है और यदि सच्चाई दिखाने के लिए दुनिया की बड़ी आबादी को उन के ग़लत कामों की वजह से सज़ा देना चाहे तो परवाह नहीं करता और सज़ा देता है। इस बारे में एक कहानी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन की उस का वर्णन करते हुए फरमाते

हैं कि बचपन में हमें कहानियाँ सुनने का बहुत शौक था। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहते तो आप हमें ऐसी कहानियां सुनाते जिन्हें सुनकर नसीहत हासिल होती है।(यह विषय बयान करते हुए आप फरमा रहे हैं।) इन्हीं कहानियों में से एक कहानी मुझे इस समय याद आ गई। जब जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़बान से मैंने सुना। आप फरमाते हैं कि हज़रत नूह के ज़माना में तूफान इसलिए आया कि लोग उस समय बहुत गंदे हो गए थे और गुनाह करने लग गए थे। वह जैसे-जैसे अपने गुनाहों में बढ़ते जाते ख़ुदा तआला की निगाह में उनकी कीमत गिरती जाती। यह कहानी है कि आख़िर एक दिन एक पहाड़ी की चोटी पर कोई पेड़ था और वहाँ घोंसले में चिड़िया का एक बच्चा बैठा हुआ था। इस बच्चे की माँ कहीं गई और फिर वापस न आ सकी। शायद मर गई या और कोई कारण हुआ कि न आई। बाद में इस चिड़िया के बच्चे को प्यास लगी और वह प्यास से तड़पने लगा और अपनी चोंच खोलने लगा। तब ख़ुदा तआला ने यह देखकर अपने फरिशतों को हुक्म दिया कि जाओ और ज़मीन में पानी बरसाओ और इतना बरसाओ कि इस पहाड़ी पर जो पेड़ है उसके घोंसले में पहुँच जाए ताकि चिड़िया का बच्चा पानी पी सके। फरिशतों ने कहा खुदाया वहां तक पानी पहुंचाने में तो सारी दुनिया डूब जाएगी। ख़ुदा तआला ने कहा कि कोई परवाह नहीं। इस समय दुनिया के लोगों की मेरे समीप इतनी भी हैसियत नहीं जितनी इस चिड़िया के बच्चे की हैसियत है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 678-679)

इसलिए यद्यपि यह कहानी है लेकिन इस कहानी में यह सबक है कि सच्चाई और नेकी से खाली दुनिया सारी की सारी मिलकर भी ख़ुदा तआला के समीप एक चिड़िया के बच्चे जितनी भी हैसियत नहीं रखती।

इसलिए आज इस कहानी से जहां हम यह शिक्षा लेते हैं कि सच्चाई पर खड़ा होना चाहिए। अपनी समीक्षा भी करनी चाहिए कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इसलिए माना है कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दें। अपने अंदर की बुराइयां दूर करेंगे और नेकियों को स्थापित करेंगे। लेकिन समय के साथ हमारी हालत में अगर तरक्की के बजाय गिरावट हो रही है, नीचे गिर रही है तो हम अपने लक्ष्य से दूर हट रहे हैं, तो अल्लाह तआला को भी हमारी कोई परवाह नहीं होगी।

इसी तरह यह भी कोई ढकी छुपी बात नहीं है कि दुनिया की क्या हालत हो रही है। बहुत सारे देशों में न जनता और न सरकारें एक दूसरे का हक़ अदा कर रही हैं। फित्ना तथा फसाद है और जहां ज़ाहिर में फित्ना फसाद की बात नहीं या बहुत अधिक हालत ख़राब नहीं वहाँ भी अल्लाह तआला की मंशा के ख़िलाफ न केवल ख़ुदा तआला से दूर होकर बल्कि उसके ख़िलाफ अपमानजनक बातें कर के, ग़लत बातें कर के उसकी उपेक्षा करने की कोशिश की जा रही है। वहां गंदगियों में भी इतने डूब रहे हैं कि फितरत के ख़िलाफ कामों को कानूनन लागू किया जा रहा है बल्कि कहा जाता है जो गंदे कामों का समर्थन नहीं करता, वह कानून का मुजरिम है। यह ज़लज़ले, यह तूफान, ये दंगे, भारी बारिश जिन्होंने तबाही फैलाई हुई है यह इसलिए है कि गुनाहों का अधिकता हो रहा है और यह तो अब चेतावनी है जो अल्लाह तआला दे रहा है, होशियार कर रहा है। इसलिए इस मामले में भी अहमदियों का बहुत बड़ा काम है कि दुनिया को होशियार करें और बताऐं कि अगर अपने सुधार की ओर ध्यान न दिया तो अल्लाह तआला दुनिया में बहुत अधिक विनाशकारी आपदाओं से आपदा ला सकता है। अल्लाह तआला करे कि दुनिया को अक्ल आए।

फिर आजकल की बातों में से एक बात हम देखते हैं और हमेशा से यह है कि दुनिया में अपने हक लेने के लिए बातें होती हैं चाहे इस से दूसरे को कितना ही नुकसान पहुंचे। एक वास्तविक मुसलमान की इस बारे में क्या सोच होनी चाहिए इस बारे में यह घटना बेहतरीन मार्ग दिखाने वाला है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक सहाबी अपना घोड़ा दूसरे सहाबी के पास बेचने के लिए लाया और इसकी क़ीमत जैसे दो सौ रुपए बताई। दूसरे सहाबी ने कहा कि मैं इस क़ीमत में घोड़ा नहीं ले सकता क्योंकि इसकी क़ीमत दुगुनी है। मालूम होता है कि उसने दूसरे को कहा कि लगता है कि आप को घोड़ों की कीमत का पता नहीं लेकिन मालिक ने अधिक क़ीमत लेने से इनकार कर दिया और कहा कि जब मेरा घोड़ा अधिक क़ीमत का नहीं तो मैं क्यों अधिक क़ीमत लूँ। और इस पर उनकी तकरार होती रही यहां तक कि मध्यस्थ के माध्यम से उन्होंने फैसला किया। यह इस्लामी रूह थी। जो इन दो सहाबा ने दिखाई। इस्लाम का हुक्म यही है कि हर आदमी बजाय अपना हक लेने और उस पर ज़ोर के दूसरे के हक को देने और इसे स्थापित करने की कोशिश करे। (उस ज़माने में कुछ हड़तालें हो रही थीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि) जिस समय यह रूह स्थापित हो जाए उस वक्त सारी strikes अपने आप ही बंद हो जाती हैं। लेकिन कम से कम नेकी यह है कि जब किसी की तरफ से अपने हक का सवाल पैदा हो तो उसे वह हक दे दिया जाए तो अगर वह उसका हक बनता है। यह ग़ैर इस्लामी रूह है कि चूंकि दूसरे के हक पर हम एक लंबे समय से स्थापित हैं, इससे लाभ उठा रहे हैं और उस हक को अपना हक समझने की हमें आदत हो गई है इसलिए हम दूसरे को वह हक नहीं दे सकते।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमीद भाग 17 पृष्ठ137)

यह बहुत ग़लत बात है जो इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ है।

आजकल विकसित दुनिया में भी यह हड़तालों का जो हक दिया गया है वह भी बिना सोचे समझे है। यह नहीं देखते कि सीमा क्या होनी चाहिए। जैसे आजकल यहां इस देश में, (यू.के) में डॉक्टरों की यूनियन की हड़ताल है जिस से मरीज़ परेशान हो रहे हैं। अपना हक लेने के लिए मरीज़ों को न केवल इलाज की सुविधा के अधिकार से वंचित किया जा रहा है बल्कि कई बार उनकी ज़िन्दगी से भी खेला जा रहा है। मुझे याद है इस बार जापान के दौरे में एक ईसाई पादरी जो बड़े शरीफ़ इंसान हैं उन्होंने मुझ से सवाल किया कि शांति की क्या परिभाषा है। कैसे स्थापित किया जाए। कहने लगे कि मुझे अब तक संतोषजनक जवाब कहीं से नहीं मिला कि शांति की क्या परिभाषा है। तो मैंने उन्हें यह बताया जो मैं पहले भी बता चुका हूँ कि इस्लाम कहता है कि जो अपने लिए पसंद करो वह दूसरे के लिए पसंद करो। जब ऐसा करोगे तो एक दूसरे के हक स्थापित करते रहोगे और जब हक स्थापित करोगे तो अमन होगी। एक दूसरे के लिए तो तुम लोग सलामती भी भेज रहे होगे। कहने लगा यह परिभाषा मेरे दिल को बड़ी लगी है यह पहली बार सुनी है।

तो आज इस्लाम ही हर मामले के वास्तविक मार्ग दिखा सकता है लेकिन इसके व्यावहारिक नमूने दिखाए बिना हम दुनिया को राज़ी नहीं कर सकते। नाज़ायज़ हक लेने का तो सवाल ही नहीं अगर हम जायज़ हक भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाएं इस लिए कि शांति स्थापित करनी है। तो अमन क़ायम करना होगा। हम जायज़ हक भी छोड़ दें तो कोई फर्क नहीं पड़ता और जब यह होगा तो क्योंकि तब एक समाज में दोनों द्वारा हक अदा करने की कोशिश हो रही होगी तो दूसरा पक्ष भी अगर मोमिन है तो वह भी नाजायज़ हक नहीं लेगा। यह हो ही नहीं सकता कि किसी दूसरे का अवैध अधिकार ले। लेकिन अफसोस है कि कई बार कज़ा में ऐसे मामले आते हैं कि हमारी जमाअत में भी भाई-भाई का अधिकार दबा रहा होता है या अन्य रिश्तेदारों के हक दबा रहे हैं। अगर हम यह इस तरफ ध्यान दें तो हमारे कज़ा के भी कई मस्ले हल हो सकते है।

लड़ाई झगड़े खत्म करने के लिए इस्लाम क्या सोच हमें देता है और सहाबा के क्या नमूने हमारे सामने हैं। रिवायतों में आता है कि एक बार इमाम हसन और इमाम हुसैन के बीच किसी बात पर तकरार हो गई। भाइयों-भाइयों में कई बार नाराज़गी की बात हो जाती है, बहस हो जाती है। हज़रत इमाम हसन की तबियत बहुत सुलझी हुई और नरम थी लेकिन हज़रत इमाम हुसैन की तबीयत में जोश पाया था। उन में जो झगड़ा हुआ उस में हज़रत इमाम हुसैन की तरफ से अधिक सख्ती की गई लेकिन हज़रत इमाम हसन ने धैर्य से काम लिया। इस झगड़े के समय कुछ और सहाबा भी मौजूद थे। जब झगड़ा खत्म हो गया तो दूसरे दिन एक आदमी ने देखा कि हज़रत इमाम हसन जल्दी जल्दी किसी ओर जा रहे हैं उस ने उन से पूछा कि आप कहां जा रहे हैं ? हज़रत हसन कहने लगे कि मैं हुसैन से माफी मांगने चला हूँ। वह आदमी कहने लगा कि आप माफी मांगने जा रहे हैं। मैं तो ख़ुद उस झगड़े के समय मौजूद था और मैं जानता हूँ कि हुसैन ने आप के बारे में सख्ती से काम लिया। इसलिए यह उनका काम है कि वे आप से माफी मांगें न कि आप उनसे माफी मांगने चले जा रहे हैं। हज़रत हसन ने कहा कि यह ठीक है। मैं इसलिए तो उनसे माफी मांगने जा रहा हूँ कि उन्होंने मुझ पर सख्ती की थी क्योंकि एक सहाबी ने मुझे सुनाया है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फरमाया कि जब दो आदमी आपस में लड़ पड़े तो उनमें से जो पहले सुलह करता है वह जन्नत में दूसरे से पांच सौ साल पहले दाख़िल कर जाएगा। तो मेरे दिल में यह सुनकर यह ख़ायाल पैदा हुआ कि मैंने कल हुसैन को बुरा भला सुनाया और उन्होंने मुझ पर सख्ती की। अब अगर हुसैन माफी मांगने के लिए मेरे पास पहले पहुंचे और उन्होंने सुलह कर ली तो मैं तो दोनों जहाँ से गया कि यहां भी मुझ पर सख्ती हो गई और अगले

जहान में भी पीछे रहा। इसलिए मैंने यही फैसला किया कि मुझ पर जो सख्ती की गई वह तो हो गई। अब मैं उन से पहले माफी मांग लूंगा ताकि इसके बदले में मुझे जन्नत में तो पांच सौ साल पहले मिल जाए।(उद्धरित अल्फज़ल 23 मई 1944ई पृष्ठ 4 कालम 2-3 जिल्द 32 नम्बर 119) इसलिए यह वह सोच है जिसे हमें अपने पर लागू करना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद एक जगह फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मैंने एक लतीफा सुना हुआ है जो शायद मकामाते हरीरी या किसी और किताब का किस्सा है। आप फरमाया करते थे कि कोई मेहमान कहीं नहाने के लिए गया। हमाम के मालिक ने विभिन्न ग़ुलामों को सेवा के लिए तय किया हुआ था। कई देशों में हमाम होते हैं जहां ग़ुलाम होते हैं जो आने वालों की मालिश करते हैं। नहलाते हैं। कहते हैं ऐसा संयोग हुआ कि उस समय मालिक मौजूद नहीं था। जब वह नहाने के लिए हमाम में दाख़िल हुआ तो सभी ग़ुलाम उसे आकर चिमट गए और चूंकि सिर को आसानी से धो जा सकता है इसलिए एक दम सब सिर पर आ गिरे। एक कहे कि मेरा सिर। दूसरा कहे यह मेरा सिर है। जिस पर आपस में लड़ाई शुरू हो गई और एक ने चाकू मार दिया जिस से वह घायल हो गया। शोर होने पर पुलिस भी आ गई और मामला अदालत तक पहुंचा। अदालत के सामने भी एक ग़ुलाम यह कह रहा था कि यह मेरा सिर दूसरा कहे कि मेरा सिर था। अदालत ने नहाने वाले से पूछा तो वह कहने लगा हुज़ूर ! यह तो बिना सिर के थे। मूर्ख थे। इनकी बातों पर तो मुझे आश्चर्य नहीं। हैरत यह है कि आप ने भी यह सवाल कर दिया। हालांकि सिर न उसका है न इसका है। सिर तो मेरा था।

तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह उदाहरण इस लिए दिया करते थे कि दुनिया के झगड़े बेहूदा होते हैं। मेरा और तेरा क्या ग़ुलाम का तो कुछ भी नहीं होता। वह तो जब अपने आप को कहता है कि मैं अब्दुल्ला हूँ तो इसका मतलब यह होता है कि अब उसका कुछ नहीं। एक असली मुसलमान के बारे में बताया जा रहा है और यह घटना इस संदर्भ में बयान हो रही है कि अल्लाह तआला का जो बन्दा होता है वह मेरा या तेरे का सवाल नहीं करता। वह तो अल्लाह तआला का बंदा है। जब वह कहता है कि मैं अब्दुल्ला हूँ। अब उसका कुछ भी नहीं होता सब कुछ ख़ुदा तआला का है। वास्तविक मोमिन जब बनता है तो कहता है कि हर चीज़ अल्लाह तआला की है। इसके बाद मेरे तेरे का सवाल ही कहाँ रह सकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि कुरआन पढ़ कर देख लो इसमें रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम भी अब्दुल्ला रखा गया है जैसा कि आता है "लमा काम अब्दुल्लाह" तो ख़ुदा तआला का ग़ुलाम होते हुए हमारी कोई चीज़ नहीं रहती। बल्कि सब कुछ ख़ुदा तआला का हो जाता है। इसलिए कुरआन मजीद ने स्पष्ट रूप में बताया है कि हम ने मोमिनों से माल व जान ले ली। दोस्त, मित्र, रिश्तेदार जब जान के अधीन आते हैं और बाकी चीज़ें माल के अधीन आती हैं। और यही दो बातें होती हैं जिनका मनुष्य मालिक होता है और अल्लाह तआला फरमाता है कि हम ने यह दोनों बातें मोमिनों से ले लीं उनका जान भी ले लिया और उनका माल भी ले लिया। इसका मतलब यह है कि तुम में झगड़े नहीं होने चाहिए कि ये चीज़ें मेरी हैं और यह चीज़ें मेरी हैं। और वह उस की। यह झगड़े न करो। मेरे और तेरे का सवाल यहां नहीं होता। आप अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए ज़ोर लगाओ और छोड़ दो इन बातों को कि तुम कहो कि अमुक सदर क्यों बना(अब यहां चुनाव की बात हो गई उहदेदारों की बात हो गई। कुछ लोग झगड़े पैदा करते हैं कि अमुक क्यों "इमामुस्सलात" बन गया हम इस के पीछे नमाज़ें नहीं पढ़ेंगे।) आप अमुक सदर क्यों बन गया। अमुक क्यों न बना। फलाँ सेक्रेटरी क्यों बन गया। अमुक क्यों न हुआ। या जब तक अमुक आदमी इमाम न बने हम अमुक के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ सकते।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 16 पृष्ठ 270-271)

ये बातें केवल सुनने के लिए नहीं हैं। शायद कइयों का ख़याल हो कि हज़रत मुस्लेह मौऊद के ज़माने में शायद ऐसे लोग थे और अब ऐसे नहीं हैं। अभी भी ऐसी शिकायतें मिलती रहती हैं। उस ज़माना में तो सहाबा भी थे जो ऐसे टेढ़े लोगों का सुधार भी कर दिया करते थे लेकिन हम जो नबुव्वत के समय से दूर जा रहे हैं और भविष्य में अधिक दूर जाते रहेंगे इस ज़माने में हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए। पहले भी इस ओर ध्यान दिला चुका हूं कि हमें बहुत सावधानी करनी चाहिए। हमें पहले से अधिक इस बात को समझने की जरूरत है कि हम किस तरह अब्दुल्ला बनने का हक अदा करना है और अपनी ज़िद और अनानियत को छोड़ना है और अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने की कोशिश करनी है। चुनाव के मौके पर भी ऐसे सवाल उठते रहते हैं जब बहुमत के ख़िलाफ फैसला दिया जाए तो कई बार कुछ परिस्थितियों में तो इस तरह के सवाल लोग लिखते रहते हैं। यह साल भा चुनाव का साल है जमाअत के लिहाज़ से इस साल चुनाव होने हैं। इस लिहाज़ से भी अपनी सोचों को को ठीक करने की ज़रूरत है कि दुआ के बाद हर सम्बन्ध को और हर रिश्ते को छोड़ कर अपना हक जो है वह सही इस्तेमाल करें। अपनी राय दें और इस के बाद जो फैसला हो उसे कुबूल कर लें। प्रत्येक पूरी तरह से अपनी ज़ातियात से ऊपर होकर अपने फैसले करें। ज़ैली तंजीमों में भी ऐसे सवाल उठते रहते हैं। अभी दो दिन पहले ही एक देश में एक मज्लिस की लजना का चुनाव हुआ। वहाँ से मुझे ख़त आ गया कि क्यों फलाँ को बनाया गया है। अमुक को क्यों नहीं बनाया गया। वह तो ऐसी है, वह वैसी है। तो इस प्रकार की बे-होदगियों से हमें बचना चाहिए। जो भी बना दिया जाए इस अवधि के लिए जब तक वह बनाया गया बहरहाल उस से पूरा सहयोग करना चाहिए।

फिर एक बात की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया। एक बात यह है कि मोमिन को चाहिए कि पक्के इरादे के साथ कोशिश करे और उसे अंजाम तक पहुंचाए और बजाय दूसरों पर भरोसा करने के चाहे अफसर हों या ओहदेदार हों वह सिर्फ अपने अधीनस्थों पर निर्भर न करें बल्कि ख़ुद भी सीधे हर काम पर निगरानी रखें और involve होने की कोशिश करे। तभी काम सही रंग में अंजाम तक पहुंच सकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि एक अमीर आदमी था। उसका एक बड़ा लंगर था। जिस से ग़रीब लोग बड़ी संख्या में रोज़ाना खाना खाते थे लेकिन बड़ी ख़राबी यह थी कि निज़ाम में ख़राबी बहुत अधिक थी। अमीर आदमी था ख़ुद इस आदमी में निगरानी की रूचि नहीं थी। इस ओर ध्यान नहीं देता था और मुलाज़िम ख़यानत करने वाले और बद दयानत थे। कुछ तो सौदा लाने वाले बहुत महंगा सौदा लाते थे और कम मात्रा में लाते थे और कुछ इस्तेमाल करने वाले अपने घरों को ले जाते थे और फिर खाना तैयार करने वाले कुछ ख़ुद ही खा जाते थे। कुछ अपने रिश्तेदारों को खिला देते थे और कुछ इधर उधर बर्बाद कर देते थे। इसी तरह स्टोर रूम खुले रहते और सारी रात कुत्ते और गीदड़ आदि खाना का सामान खाते और बर्बाद करते रहते थे। नतीजा यह हुआ कि वह बहुत कर्ज़दार हो गया और बीस साल की बद निज़ामी के बाद उसे बताया गया कि तुम कर्ज़दार हो चुके हो। उसकी तबीयत में उदारता थी। उस आदमी ने इसलिए लंगर बंद करना गवारा न किया लेकिन इधर उसे कर्ज़ उतारने की भी फिक्र थी। उसने अपने दोस्तों को बुलाया। अपनी कमज़ोरी तो नहीं बताई और न कोई कहता है। इन सब से बताया कि इस तरह कर्ज़दार हो गया हूँ। इन सभी ने कहा कि स्टोर रूम का कोई दरवाज़ा नहीं है। सारी रात गीदड़ और कुत्ते आदि सामान ख़ुराक जो है वह ख़राब करते रहते हैं। इसलिए बहुत सा सामान नष्ट हो जाता है। अगर स्टोर का दरवाज़ा लगा दिया जाए तो काफी बचत हो सकती है। उसने आदेश दिया कि दरवाज़ा लगा दिया जाए तो वह लगा दिया गया। यह कहानियों में से एक कहानी है और कहानियों में कुत्ते और गीदड़ जानवर भी बोला करते हैं। कहते हैं कि रात को गीदड़ों और कुत्तों ने स्टोर रूम में दरवाज़ा लगा हुआ देखा तो वह बहुत शोर मचाया। अचानक कोई बुड्ढा और बड़ा ख़रांट किस्म का गीदड़ या कुत्ता आया। उसने पूछा। तुम शोर क्यों मचाते हो। बाक़ियों ने कहा स्टोर रूम में दरवाज़ा लग गया है हम खाएंगे कहां से। हमारे तो इलाके के सारे कुत्ते और गीदड़ यहीं से खाया करते थे। उसने कहा तुम यूं ही रोते हो, शोर मचा रहे हो, अपना वक्त बर्बाद कर रहे हो। जिस आदमी ने बीस साल तक अपना घर लुटते देखा और उसका कोई प्रबंध नहीं किया उस के स्टोर का भला दरवाज़ा किस ने बंद करना है। ख़ुद तो उसने निगरानी नहीं करनी। इसलिए घबराओ नहीं।

तो इस कहानी में यह बताया गया है कि यदि "अगर चाहें" और "चाहें" में बड़ा अंतर होता है। कुत्तों और गीदड़ों ने शोर मचाया कि अगर उसने चाहा और दरवाज़ा बंद कर दिया तो हम खाएंगे कहां से और उनका जो अनुभवी और ख़रांट नेता था उस ने कहा कि जो अमीर आदमी है उसने चाहना ही नहीं। उसने ध्यान ही नहीं देना तो शोर मचाने की क्या ज़रूरत है। यह बयान करने के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि अगर हमारी जमाअत ने चाहना ही नहीं तो कुछ नहीं हो सकता, लेकिन अगर वे चाहें तो बड़े मुश्किल काम भी दिन में कर सकते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हमारे बचपन की कहानियों में से अलादीन के चिराग़ की कहानी बहुत मशहूर थी। अलादीन एक ग़रीब आदमी था उसे एक चिराग़ मिला। वह जब चिराग़ को रगड़ता था तो एक जिन ज़ाहिर होता था।(यह

बच्चों की कहानी बनाई हुई है) जिन को जो कुछ कहता वह तुरंत तैयार कर सामने रख देता। जैसे अगर वह उसे कोई महल बनाने के लिए कह देता तो वह आनन-फानन महल तैयार कर देता है। फरमाते हैं कि बचपन में तो हम यही समझते थे कि अलादीन का चिराग़ एक सच्ची घटना है। जब अक्ल नहीं थी लेकिन जब बड़े हुए तो समझा कि यह केवल ख़याल है। यह कहानी है। लेकिन इसके बाद जब बचपन से बुढ़ापे की ओर आया तो पता चला कि यह बात ठीक है।(यहाँ बैठे लोग बड़े हैरान हो रहे होंगे कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने कहा कि बुढ़ापे की ओर आया तो पता लगा कि यह बात ठीक है।) अलादीन का चिराग़ ज़रूर होता है लेकिन कहते हैं कि वह तेल का चिराग़ नहीं होता बल्कि अज़म (प्रतिबद्धता) और इरादे का चिराग़ है। जिस को ख़ुदा तआला वह चिराग़ दे कर वह उसे हरकत देता है और इस कारण से कि अज़म और इरादा ख़ुदा तआला की विशेषताओं में से है जिस तरह ख़ुदा तआला "कुन" कहता है और काम होने लग जाता है। उसी तरह जब उस के अनुसरण में निर्धारित नियम के अधीन उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए (ये सारी शर्तें हैं, याद रखें) यह दुआ करते हुए और मदद मांगते हुए कोई इंसान "कुन" कहता है तो वह हो जाता है। अत: बचपन में हम अलादीन के चिराग़ के कायल थे। जवानी में हमारा यह विचार हिल गया मगर बुढ़ापे में एक लंबे अनुभव के बाद पता चला कि अलादीन के चिराग़ वाली कहानी सच्ची है लेकिन यह एक रूपक कथा है और चिराग़ पीतल का नहीं बल्कि अज़म और इरादे का चिराग़ है। जब उसे रगड़ा जाता है तो चाहे कितना बड़ा काम क्यों न हो वह आनन-फानन हो जाता है।

(उद्धरित अल्फज़ल 24 जनवरी 1962 पृष्ठ 2-3 जिल्द 16 नम्बर 20)

इसलिए यह हम में से हर एक की सोच होनी चाहिए कि हम ने सिर्फ अगर चाहने तक नहीं रहना बल्कि चाहने के साथ ही अपनी सारी क्षमताओं के साथ इस काम को करना है, अल्लाह तआला से मदद मांगनी है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो चाहते भी हैं लेकिन कई बार चाहने के बावजूद कुछ काम नहीं होते। इसलिए वह चाहना जो है वह बेदिली से होता है उस के साथ वह सब सामान जो बयान किए गए हैं, वे नहीं होते। अज़म नहीं होता, हौसला नहीं होता, मेहनत नहीं की जाती। सिर्फ दिल में सोचा जाता है कि हम चाहते हैं।

इस बात को विशेष रूप से मैं देखता हूँ जब दुआ का सवाल आता है। कई लोग मेरे पास आते हैं कि हमारे लिए दुआ करें हम चाहते हैं कि दुआ में नियमित हो जाएं लेकिन नियमित नहीं। बाकी कामों का जब चाहते हैं तो वह कर लेते हैं लेकिन नमाज़ क्योंकि बेदिली से चाहते हैं सारी अपनी क्षमताएं इस पर इस्तेमाल नहीं करते अल्लाह तआला से मदद नहीं मांगते इसलिए नमाज़ों की आदत भी नहीं पड़ती। ऐसे लोगों का चाहना जो है वह वास्तव में न चाहना होता है। यह हो ही नहीं सकता कि अगर इंसान चाहे भी और काम न हो सके। नमाज़ उनके लिए वास्तव में एक द्वितीय चीज़ होती है। सांसारिक काम पहली प्राथमिकता होती हैं जो एक ग़लत तरीका है, इसलिए इस पर अमल नहीं होता। यह कैसे हो सकता है कि इंसान चाहे भी एक पक्का इरादा भी हो, उसके लिए करने को मज़बूत इरादा भी हो और वह काम न हो। इसलिए यह अपनी सुस्तियाँ होती हैं और बे रग़बती होती है जिस को बिना वजह के चाहने का नाम दे दिया जाता है।

एक घटना का वर्णन करते हैं कि हम बचपन में एक किस्सा सुना करते थे जिसे सुनकर हंसा करते थे हालांकि दरअसल वह हंसने के लिए नहीं बल्कि रोने के लिए बनाया गया था और इसमें मौजूदा मुसलमानों का नक्शा खींचा गया है। मगर इस किस्से के बनाने वाले ने इशारे की ज़बान में मुसलमानों की हालत का वर्णन किया है ताकि मौलवी उसके पीछे न पड़ जाएं।(और अगर कोई अहमदी भी ऐसी हरकतें करता है तो उसे भी अपना आकलन करना होगा।) वह किस्सा यह है कि कोई दासी(किसी की नौकर) थी जो सेहरी के समय नियमित उठा करती थी। लेकिन रोज़ा नहीं रखती थी। मालिका ने समझा कि शायद वह इस काम में मदद देने के लिए उठती है। लेकिन चूंकि वे रोज़ा नहीं रखती थी इसलिए मलिका ने माना कि इस से ख्वामख्वाह सहरी के समय तकलीफ देने की क्या ज़रूरत है। उस समय काम में ख़ुद कर लिया करूंगी। इसलिए दो चार-दिन के बाद मालिका ने कहा कि लड़की तू सेहरी के समय न उठाकर, हम ख़ुद इस समय काम कर लिया करेंगे। तुम्हें इस वक्त तकलीफ करने की ज़रूरत नहीं। यह बात सुनकर लड़की बहुत हैरत से अपनी मलिका की तरफ देखा कि यह मुझ से कया कह रही है और कहने लगी बीबी नमाज़ में नहीं पढ़ती, रोज़ा नहीं रखती अगर सहरी भी न खाऊं तो काफिर ही हो जाऊं। दरअसल इस प्रतीकात्मक भाषा में मुसलमानों की हालत है। (या उन लोगों की हालत है जो नमाज़ों पर ध्यान नहीं देते। फरमाते हैं कि दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि अगर किसी मुसलमान को कहा जाए,(जुम्अ: अलविदा की बात की है लेकिन हर जुम्अ और हर नमाज़ पर यह हालत होती है) कि मियां जुम्आ अलविदा किया बनता है। तुम क्यों ख़्वामख़्वाह इसके लिए ख़ुद को तकलीफ में डालते हो। बाकी जुम्ए नहीं पढ़ते तो यह भी नहीं पढ़ो। तो वह आश्चर्य से तुम्हारे मुंह देखने लग जाएगा। कहेगा भाईजान यह आप क्या कह रहे हैं कि रोज़ाना नमाज़ के लिए मस्जिद में नहीं आता। रोज़े में नहीं रखता। अगर जुम्अ अलविदा न पढ़ूँ तो काफिर ही हो जाऊं। तो यह भी एक हंसी ही है कि एक समय नमाज़ पढ़ ली जाए और समझ लिया जाए कि फर्ज़ अदा हो गए। (या उन लोगों के लिए भी जो यह समझते हैं कि मस्जिद में एक नमाज़ आ कर पढ़ ली और फर्ज़ अदा हो गया बस काफी है।)

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमीद भाग 23 पृष्ठ 428-439)

इसलिए वे लोग जो नमाज़ की ओर नियमित ध्यान नहीं देते वे इसी श्रेणी में आते हैं। पांच नमाज़ें हर वयस्क अक्ल वाले मुसलमान पर फर्ज़ हैं और पुरुषों पर मस्जिदों में इस नमाज़ जमाअत के साथ फर्ज़ है और इसके लिए इन्तज़ाम होनी चाहिए। या तो यह कह दें हम बालिग़ नहीं या यह कह दें बे अक्ल हैं, तो ठीक है। और जब ये दोनों चाज़ें नहीं तो नमाज़ जमाअत के साथ हर जगह कोशिश होनी चाहिए।

एक रिवायत वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ख़ुद सुना है(यह आप की तहरीरों में भी है।) कि जब कोई बादशाह या अमीर एक जगह जाता है तो इसका अर्दली भी साथ चला जाता है। उसे जो भी उसके साथ होता है अंदर जाने की इजाज़त मांगनी नहीं पड़ती। आजकल भी देख लें मिनिस्टर आते हैं, दूसरे लोग आते हैं उनके जो प्रोटोकोल अफसर हैं या उनकी हिफाज़त करने वाले हैं, सारे साथ जाते हैं। उनकी इजाज़त नहीं ली जाती कि वे भी साथ आएंगे जैसे अगर वायसराय किसी गवर्नर को बुलाए (उस ज़माने में भारत पाकिस्तान में जो अंग्रेजों की हुकूमत थी उस में वायसराय था।) अगर वायसराय गवर्नर को बुलाए तो गवर्नर का जो अर्दली है वह बिना किसी दावत के उसके पास जाएगा और वहाँ दावत में रक्षक और सेवक भी शामिल होंगे इसलिए फरमाया कि तुम्हारी हालत कितनी भी कम हो अगर तुम फरिशतों से संबंध बना लो तो वह जहां भी जाएंगे तुम उनके साथ जाओगे। (अल्लाह तआला के साथ संबंध पैदा होगा तो उसके फरिशतों के साथ संबंध पैदा होगा।) तुम उनके अर्दलियों और चपड़ासियों में शामिल हो जाओगे। अगर वह लोगों के दिलों और दिमागों में जाएंगे तो तुम भी उनके साथ जाऊगे। अत: फरमाते हैं कि तुम इस अज़ीम ताकत को समझो जिसे ख़ुदा तआला ने तुम्हारे लिए बनाया है तुम्हारी ताकत रूहानियत के साथ जुड़ी हुई है। तुम इसे मज़बूत बनाने के लिए फरिशतों के साथ अधिक से अधिक संबंध पैदा करो ताकि तुम्हें लोगों के दिलों तक पहुँच प्राप्त हो जाए। अगर तुम्हें लोगों के दिलों तक पहुँच प्राप्त हो जाए तो सारे पर्दे दूर हो जाएंगे और जहां ख़ुदा तआला का नूर पहुंचेगा तुम भी वहां पहुंच जाओगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उस समय जलसा में आने वालों को यह नसीहत फरमाई थी कि तुम अपनी ज़िम्मेदारियों को समझो और जिस शौक से तुम आए हो उसे पूरा करने के सामान पैदा करो। इस तरह न हो कि जिस तरह कुशती देखने के लिए कुछ लोग पहले आ जाते हैं तुम भी यहाँ आ गए हो। बल्कि अल्लाह तआला से संबंध पैदा करो और फिर अल्लाह तआला से संबंध बनाने के कारण उसके फरिशतों से सम्बन्ध पैदा होगा और यह रूहानियत जो है वह लोगों के दिमाग़ों पर प्रभाव डालेगी तो तुम्हारे काम फरिशते कर रहे होंगे और जहां वे पहुंचेंगे वहां तुम्हारा नाम भी पहुंचा देंगे क्योंकि तुम्हारी नीयत नेक है। तुम्हारी रूहानियत में तरक्की है। तुम ख़ुदा तआला के लिए काम कर रहे होगे।

(उद्धरित अल्फज़ल 9 जनवरी 1955 ई पृष्ठ 3 कालम 1 जिल्द 9 नम्बर8)

इसलिए इस बुनियादी असूल को हमेशा याद रखना चाहिए कि जब एक जगह जमा होते हैं चाहे जलसे हों इज्तिमा हों। जब रूहानियत की तरक्की के लिए जमा होते हैं तो इसे हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए और अपनी मज्लिसों को सिर्फ अस्थायी रूहानी मज्लिस न बनाएं बल्कि ऐसी बनाएँ जो रूहानी मज्लिसों के जो भी प्रभाव हैं वह स्थायी रूप से बनी रहें और फिर फरिशते भी मदद करने वाले बन जाएं। और जहां भी हम कोशिश करें वहाँ फरिशते दाख़िल हो कर उस पर प्रभाव डालें और हमारी कोशिशों को सफल बनाने वाले हों। हमेशा याद रखना चाहिए कि वास्तविक मोमिन वही है जो एक नेक काम करता है, तो पहले से अधिक जब नेक

काम करे तो पहले से अधिक विनम्रता और इस्तिग़फ़ार के साथ अल्लाह तआला से अधिक नेक कामों की दुआ मांगनी चाहिए और ताकि यह सिलसिला चलता रहे और इसका अंजाम भी अच्छा हो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि कई सहाबा कहते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुआएं करते देखते तो हमें यह मालूम होता कि जैसे एक हांडी जोश से उबल रही है। अत: अपने नफ़सों के सुधार की ओर ध्यान हो और तक्वा और पवित्रता पैदा करो और मत समझो कि तुम अच्छा काम कर रहे हो क्योंकि नेक से नेक काम में भी बेईमानी पैदा हो सकती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहा करते थे कि ना जाने क्या बात है कि आजकल लोग हज करके आते हैं उनके दिलों में पहले से अधिक अंहकार और बुराई पैदा हो चुकी होती है। ऐसी कमी इसलिए होती है कि वह हज के अर्थ को नहीं समझते और बजाय रूहानी लिहाज़ से कोई लाभ लेने के केवल हाजी बन जाने के कारण अंहकार करने लग जाते हैं। इसके साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक लतीफा भी सुनाया करते थे कि एक बुढ़िया सर्दी के दिनों में रात के समय स्टेशन पर बैठी थी। किसी ने उसकी चादर उठा ली। जब उसे सर्दी लगी और उसने चादर ओढ़नी चाही तो उसे गुम पाया। यह देखकर वह आवाज़ देकर कहने लगी कि भाई हाजी मेरी तो एक ही चादर थी उसकी मुझे ज़रूरत है वह मुझे वापस कर दो। ले जाने वाला पास ही बैठा था ,ले कर नहीं गया था। यह सुनकर उस आदमी ने जो चादर उठाई थी शर्मिन्दा हुआ और वह चादर उसके पास रख दी मगर साथ ही उसने पूछा कि तुझे यह पता कैसे चला कि चादर चुराने वाला चोर कोई हाजी है। वह कहने लगी कि इस ज़माने में इतनी बेरहमी हाजी ही कर सकते हैं।

अत: यह मत ख़याल करो कि हम नेक कामों में लगे हुए हैं, यह मत विचार करो कि हम नेक इरादे रखते हैं। कितना ही नेक काम इंसान कर रहा हो उसमें बुराई पैदा हो सकती है और कितना ही नेक इरादा आदमी रखता हो वह उस के ईमान को बिगाड़ सकता है, क्योंकि ईमान हमारे कामों के परिणाम में नहीं आता बल्कि अल्लाह तआला के रहम के नतीजे में आता है।(यह बुनियादी चीज़ है, याद रखनी चाहिए।) हमारे अमल जितने भी हों अल्लाह तआला का रहम नहीं है, उस का फज़ल नहीं तो ईमान पूर्ण नहीं हो सकता। अत: हमेशा अल्लाह तआला के रहम पर निगाह रखें और तुम्हारी दृष्टि हमेशा उस के हाथों की तरफ उठे क्योंकि वह सवाल करने वाला जो यह समझता है कि अल्लाह तआला के दरवाज़े से उठने के बाद मेरे लिए कोई दरवाज़ा नहीं खुल सकता। वह अल्लाह तआला के फज़ल को जज़ब कर लेता है। इसलिए तुम्हारी निगाह हर समय अल्लाह तआला की तरफ ही उठनी चाहिए। जब तक तुम अपनी नज़र उसकी ओर रखोगे तुम सुरक्षित रहोगे क्योंकि जो ख़ुदा तआला की ओर निगाह उठ रही हो उसे कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता मगर जैसे ही नज़र किसी और की ओर फिर जाए और आदमी अल्लाह तआला के दरवाज़े से कदम उठा ले(यानी अल्लाह तआला के दरवाज़े से कदम उठा ले) तो चाहे कितना ही नेक इरादे और कितने ही अच्छे काम करे इसका कोई ठिकाना नहीं रहता बल्कि वे शैतान की बग़ल में जाकर बैठता है।

(उद्धरित ख़तुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 216-218)

इसलिए स्थायी तौबा और इस्तिग़फ़ार और अल्लाह तआला के फज़ल को मांगना, इस के रहम को मांगना और इसको जज़ब करने की कोशिश करना यही चीज़ें हैं जो अन्जाम बख़ैर की तरफ लेकर जाती हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक घटना सुनाया करते थे, फरमाते थे कि हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहो अन्हो के यहाँ या उमर रज़ियल्लाहो अन्हो के यहाँ(मुझे सही याद नहीं) चोरी हो गई और उनका कुछ ज़ेवर चोरी हो गया। उनका एक नौकर था वह शोर मचाता था कि ऐसे दुष्ट भी दुनिया में मौजूद हैं जो ख़ुदा तआला के ख़लीफा के यहाँ चोरी करते हुए भी शर्म नहीं करते। वह नौकर चोरी करने वाले पर भारी लानतें डाल रहा था और कहे कि ख़ुदा उस का पर्दाफाश करे और उसे ज़लील करे। आख़िर जांच करते-करते पता लगा कि एक यहूदी के यहां वह ज़ेवर गिरवी रखा गया है। जब यहूदी से पूछा गया कि यह गहने कहाँ से तुम्हें मिला तो उसने उसी नौकर का नाम बताया जो बड़ा शोर मचा रहा था और चोर पर लानतें डालता फिरता था।

तो मुंह से लानतें डाल देना या ज़बान से इताअत का दावा करना कोई चीज़ नहीं अमल वास्तविक चीज़ होती है। वरना मुंह से आज्ञाकारिता का दावा करने वाला कई बार सबसे बड़ा मुनाफिक(पाखंडी) भी हो सकता है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 516)

इसलिए बड़ी फिक्र का स्थान है यह और हमें इस बात की ओर हमेशा ध्यान देना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो एक जगह एक अहमदियत के मुख़ालिफ का ज़िक्र करते हुए जिस ने आप के सामने यह बढ़ मारी थी और यह कहा कि हमने फैसला किया है कि हम अहमदियत को कुचल देंगे। आप फरमाते हैं कि मैं भी उसे ऐसा जवाब दे सकता था कि तुम कुचल के तो देखो लेकिन मैंने उसे कहा कि किसी को मिटाना या न मिटाना या स्थापित करना यह ख़ुदा तआला के कामों में है अगर तो वह(यानी अल्लाह तआला) हमें मिटाना चाहे तो लोगों को किसी भी कोशिश की ज़रूरत ही नहीं है, वह ख़ुद ही मिटा देगा लेकिन अगर वह हमें क़ायम रखना चाहे तो कोई कुछ नहीं कर सकता। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि और तक्वा ही है जो आदमी को ऐसे दावों से बचाता है कि "मैं" कर दूंगा और वह कर दूंगा। मैं कोई चीज़ नहीं होती। तक्वा ही है जो सही जवाब सुझाता है। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि मैंने उस को यही कहा कि हम तो कुछ नहीं कर सकते लेकिन अगर अल्लाह तआला हमें बनाए रखना चाहता है तो आप कुछ नहीं कर सकते और हमें कोई नहीं मिटा सकता। फरमाया कि तक्वा ही है जो इंसान को ऐसे दावों से बचाता है कि मैं यह कर दूंगा और वह कर दूंगा। ऐसे दावों का क्या फायदा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि कादियान में या शायद किसी और जगह सख्त हैज़ा फूटा। एक नमाज़ जनाज़ा के मौके पर एक आदमी कहने लगा कि ये लोग ख़ुद मरते हैं। हैज़ा फैला हुआ है मगर लोग खाने पीने से रुकते नहीं। ख़ूब पेट भर कर खा लेते हैं। यह भी ख़याल नहीं करते कि हैज़ा के दिन हैं। कहने लगा वह आदमी जो बड़ा बोल रहा था देखो हम तो केवल एक फुलका खाते हैं। एक छोटी सी चपाती खाते हैं मगर यह कमबख्त लोग जो हैं ठूंसे जाते हैं और फिर हैज़ा से मर जाते हैं। दूसरे दिन एक और नमाज़ जनाज़ा आया तो किसी ने पूछा कि यह किसका है। तो वहाँ बहुत सारे लोग उसकी बातें सुन सुन कर तंग आ गए थे। किसी दिल जले ने कह दिया कि यह जनाज़ा है एक फुलका खाने वाले का। इसलिए इस प्रकार के दावों का क्या फायदा कि हम यूं कर देंगे, वह कर देंगे। हां अल्लाह तआला जो कहता है वह हम कह सकते हैं कि ऐसा हो जाएगा। विनम्रता का यह अर्थ नहीं है कि अल्लाह तआला जो कहता है उसे भी छुपाएं। अल्लाह तआला ने फरमाया है कि

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ

(सूरह अल्मुजादिला:22)हमने फर्ज़ कर लिया है कि हम और हमारे रसूल विजयी होंगे। अब अगर कोई यह कहे कि हम तुम्हें पीस देंगे तो मैं यह कह सकता हूँ कि अगर तो मेरी ताकत का सवाल है तो मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन अगर यह शब्द अहमदियत के बारे में कहे गए हैं तो यह कभी नहीं हो सकता। अहमदियत ज़रूर विजयी होकर रहेगी। इंशा अल्लाह।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 343)

ख़ुदा तआला के वादों पर हमें उतना यकीन है कि जितना अपनी जान पर भी नहीं है। इसलिए अहमदियत ने तो विजयी होना है। चाहे हमारे जीवन में आए या बाद में आए। लेकिन हमें इस विजय का हिस्सा बनने के लिए तक्वा पर कायम रहने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है ताकि नस्ल बाद नस्ल यह चीज़ कायम रहे और अगर हमारे ज़माने में नहीं तो हमारी नस्लें इसे देखने वाली हूँ।

दुआएं कैसे करनी चाहिए और अहमदियों पर जो मुश्किल हालात हैं उन से कैसे निकलना चाहिए इस पर रोशनी डालते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि दुनिया में मुहब्बत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन वही होता है जो माँ को अपने बेटे से होता है या माँ को अपने बच्चे से होता है। कभी-कभी माँ की छातियों में दूध सूख जाता है मगर जब बच्चा रोता है तो दूध उतर आता है। अत: जैसे बच्चे के रोए बिना माँ की छातियों में दूध नहीं उतर सकता। उसी तरह अल्लाह तआला ने भी अपने रहम को बन्दे के रोने और चिल्लाने से जोड़ दिया है। जब बंदा चिल्लाता है तो रहमत का दूध उतरना शुरू हो जाता है। इसलिए जैसा कि मैंने बताया हमें चाहिए कि अपनी ओर से बहुत कोशिश करें मगर वह कोशिश नहीं जो मुनाफिक मुराद लेते हैं और उसके बाद जिस हद तक अधिक से अधिक दुआओं को ले जा सकते हैं हमें ले जाना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उस वक्त भी तहरीक की थी कि सात रोज़े रखें और दुआएं करें। कुछ साल हुए मैंने भी कहा था कि जमाअत को रोज़े रखने चाहिए(ख़ुत्बाते मसरूर भाग 9 पृष्ठ 501-502) और जमाअत में अब तक कुछ ऐसे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +01-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 17 March 2016 Issue No. 2

MANAGER
NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Manager : + 01-9417020616
e -mail : managerbadrqnd@gmail.com
SUBSCRIPTION ANNUAL : Rs. 300/-

हैं जो उस पर कायम हैं,और रोज़े रखते हैं। कम से कम अब हमें चाहिए चालीस रोज़ें साप्ताहिक ही रखें। यानी चालीस सप्ताह तक खासकर के रोज़े रखें, दुआएं करें और नफिल अदा करें सदके दें। क्योंकि कई जगह जमाअत के जो हालात हैं उन में बहुत अधिक कठोरता और तीव्रता आती जा रही है। जब हम अल्लाह तआला के हुज़ूर चिल्लाएंगे तो जिस तरह बच्चे के रोने से माँ की छातियों में दूध उतर आता है, आसमान से हमारे रब्ब की सहायता इंशा अल्लाह तआला नाज़िल होगी और वे रोकें और मुश्किलें जो हमारे रास्ते में हैं वे दूर हो जाएंगी। पहले भी दूर होती रहीं और अब भी इंशा अल्लाह तआला दूर होंगी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि कई कठिनाइयां ऐसी हैं जिनका दूर करना हमारे अधिकार में नहीं है। हम दुश्मन की ज़बान को बंद नहीं कर सकते और इस कलम को नहीं रोक सकते। उनकी ज़बान और कलम से वह कुछ निकलता है जिसे सुनने और पढ़ने की हमें ताकत नहीं होती(और आजकल तो जब हम देखते हैं कि पाकिस्तान में बहुत गंदे शब्दों का प्रयोग करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ इश्तेहार भी लगाए जाते हैं। सरकार को उस वक्त भी ध्यान दिलाया जाता था, हालांकि उस वक्त तो अंग्रेज़ हुकूमत थी लेकिन बात नहीं सुनी जाती थी। इसी तरह सुनते थे जिस तरह बहरे सुनते हैं।) हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि वही बातें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में कही जाती हैं उस ज़माने में कही जाती थीं तो किसी और के बारे में कही जाएं तो देश में आग लग जाए मगर वे बातें लगातार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में कही जाती हैं लेकिन कहने वालों पर कोई पकड़ नहीं होती हालांकि हमें यहां तक रिपोर्ट मिली है।(उस ज़माने की यह बात है) कि कुछ विरोधियों के हलकों में यह भी कहा जाता है कि हमें अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि अहमदियों के ख़िलाफ जो चाहो लिखो कोई पकड़ नहीं होगी।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 152-153)

तो यह तो हमेशा से जमाअत के साथ व्यवहार होता आया है लेकिन अल्लाह तआला के फज़ल से हर रोक के मुकाबले में जमाअत तरक्की करती चली गई है। यह तो उस वक्त की सरकार का हाल था जिस ने इस बारे में कोई कानून पास नहीं हुआ था। पाकिस्तान में तो अहमदियों के ख़िलाफ कानून भी है और कानून उन विरोधियों की मदद करता है और वे जो चाहते हैं करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में जो मुंह में आता है, जो बकवास गंदी बात कहनी होती है वे कर जाते हैं। अहमदियों को ज़ुल्म का निशाना बनाया जाता है। अदालतें जो हैं वे भी अब ज़रा-ज़रा सी बात पर सज़ा देने पर तुली हुई हैं। तो इसके लिए तो हमें बहुत अधिक ख़ुदा तआला के सम्मुख चिल्लाने की ज़रूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान के अहमदियों को इस ओर पहले से अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। शुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकें। नवाफिल अदा करें। सदके दें। रोज़ें रखें। दुआ के बिना और अल्लाह तआला की रहमत को जोश में लाए बिना हमारे लिए और कोई रास्ता नहीं है। अल्लाह तआला खासकर उन अहमदियों को जहां यह अत्याचार हो रहे हैं जिन देशों में हो रहे हैं, या जिन स्थानों पर हो रहे हैं, ऐसी दुआओं की ताकत दे जो अल्लाह तआला के अर्श को हिलाने वाली हूँ और आम तौर पर दुनिया के अहमदियों को भी जमाअत की तरक्की और ज़ुल्म से बचने के लिए दुआओं की तरफ ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला इन को भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जमाअतों के रिपोर्टें

जमाअत अहमदिया ख़ानपुर मिल्की, बिहार में तीन दिन का तरबियती कैम्प

जमाअत अहमदिया ख़ानपुर मिल्की में 15 से 17 दिसम्बर तीन दिन का तरबियती कैम्प आयोजित किया गिया। जिस में अत्फाल को कुरआन करीम और धार्मिक तालीम दी गई। 15 दिसम्बर इशा की नमाज़ के बाद कैम्प का उद्घाटन हुआ। 17 दिसम्बर को आदरणीय अनवर हुसैन साहिब सदर जमाअत ख़ानपुर मिल्की की सदारत में जलसे का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बच्चों को इनाम भी दिए गए। सदारती ख़िताब और दुआ के साथ जलसा ख़त्म हुआ।

(सय्यद फज़ल बारी मुबल्लिग़ इन्चार्ज भागलपुर)

रिपोर्ट तरबियती कैम्प जमाअत अहमदिया धनबाद

28 से 30 नवम्बर तीन रोज़ा तरबियती कैम्प जमाअत अहमदिया धनबाद में आयोजित किया गिया। इस कैम्प में ज़िला धनबाद की चार जमाअतों से 50 से अधिक लोग शामिल हुए। कैम्प में शामिल लोगों को इस्लाम अहमदियत के बारे में और ख़िलाफत की ज़रूरत और अहमदियत के बारे में बताया गिया। कैम्प के आख़री दिन एक इजलास का आयोजन किया गिया जिस की सदारत जनाब शमीम अख़तर साहिब सदर जमाअत धनबाद ने की। तिलावत कुरआन करीम ,नज़्म के बाद मौलवी ख़ालिद अहमद मलकाना साहिब ने "इस्लाम और अमने आलम" विषय पर तक़रीर की। सदर इजलास ने लोगों का शुक्रिया अदा किया। दुआ के बाद जलसा ख़त्म हुआ।

(ख़ालिद अहमद मलकाना ज़िला मुबल्लिग़ इंचार्ज)

हरियाणा के तारीख़ी शहर कुरुक्षेत्र में गीता जंयती के अवसर पर अहमदिया जमाअत का बुक स्टाल

जमाअत अहमदिया कुरुक्षेत्र की तरफ से 11 से 23दिसम्बर हरियाणा के तारीख़ी शहर कुरुक्षेत्र में गीता जंयती के अवसर पर एक तबलीग़ी बुक स्टाल लगाया गिया। जो किसी भी मुस्लिम तंज़ीम की तरफ से लगाया जाने वाला पहला स्टाल था। इस स्टाल में लोगों का बहुत ध्यान ख़ीचा। स्टाल में आने वालों में चीफ मिनिस्टर हरियाणा जनाब मनोहर लाल खट्टर, एम. एल.ए कुरूक्षेत्र ,डिप्टी कमीशनर अंबाला आदि शामिल हैं। इन्हें जमाअत की किताबों का तोहफ़ा दिया गिया। इस के अलावा कई डाक्टरों, वकीलों और पढ़े लिखे लोगों ने स्टाल का विज़िट किया। और अच्छी प्रतिक्रियाएं दीं। एस पी साहिब कुरुक्षेत्र ने कहा कि अब मैं हर प्रोग्राम में इस्लाम के प्रतिनिधित्व के लिए अहमदिया जमाअत को दावत दूँगा। क्यूँकि यह लोग अमन को पसन्द करने वाले और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर चलने वाले हैं। मेले के संयोजकों ने कहा कि अगले साल अहमदिया जमाअत के स्टाल को बड़ी और अच्छी जगह दी जाएगी। सैंकड़ों मुसलमान भाइयों ने इस स्टाल का विज़ट किया और कहा कि अल्लाह तआला का फज़ल है कि मुसलमानों कि एक ऐसी जमाअत सामने आई जो इस्लामी शिक्षाओं को पेश करती है। इस बुक स्टाल की ख़बरें 17 अख़बारों और 5 टीवी चैनलों पर प्रसारित हुईं। 25 हज़ार से ज़यादा लीफ लेट्स पढ़े लिखे लोगों तक पुंहचाया गिया। अल्लाह तआला हमारी इस कोशिश को क़बूल फरमाए।

(मुहम्मद आरिफ भट्टी, मुअल्लिम सिलसिला हरियाणा)

रिपोर्ट वकारे अमल ख़ुद्दामुल अहमदिया कटक

अल्लाह तआला के फज़ल से10 जनवरी को मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया कटक की तरफ से अहमदिया कब्रिस्तान में एक वकारे अमल रखा गया। इस प्रोग्राम में कटक जमाअत के 15 ख़ुद्दाम शामिल हुए। सुबह 8.30 बजे वकारे अमल शुरु हुआ। अहमदिया कब्रिस्तान की सफाई के बाद 10.30 बजे अमीर साहिब ज़िला कटक ने दुआ करवाई और यह प्रोग्राम ख़ैरियत से हुआ। अल्लाह तआला हम सब को धर्म की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

(सय्यद ताहिर अहमद कायद मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया कटक)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India.